दयानन्द द्वारा स्वनिर्मित झूठे वेदमंत्र

धर्मरक्षक पं कालूराम शास्त्री जी द्वारा निर्मित मूल पुस्तक आर्य समाज की मौत का एक अंश

ग्रन्थ रक्षक– पं अमित जी वसिष्ठ

जालीवेदमंत्र

ब्राह्मण और अनेक संहिताओं को तो स्वामी जी ने वेद ही नहीं रक्खा, लिख दिया कि 'ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं पुराण हैं'। संहिता और शाखाओं को लिख दिया कि इन को हम प्रमाण नहीं मानते, ऐसा लिखने पर केवल चार किताब रह गईं इन में पूरे मंत्र नहीं इस कारण स्वा० दयानन्द जी अपने आप बनावटी जाली मंत्र बनाकर आर्यसमाजियों को यह समझा देते हैं कि देखो वेदों के ये मंत्र हैं यदि कोई कहने लगे कि ये मंत्र नहीं हैं तो उस की बात न मानियो नहीं तो मेरे कपट जाल का भंडा फूट जायगा।

नं० (७८) संध्या के आरम्भ में स्वा० दयानन्द जी ने लिखा है कि 'अथ संध्या मन्त्राः' फिर इस के पश्चात् यह मंत्र लिखा कि

ओं वाक्-वाक्, ओं प्राणः-प्राणः, ओं चक्षुः-चक्षुः, ओं श्रोत्रं-श्रोत्रं, ओं नाभिः, ओं हृदयं, ओं कण्ठः, ओं शिरः, ओं बाहुभ्यां यशोबलम्, ओं करतलकरपृष्ठे ॥

कृपा कर आर्यसमाजी बतलावें कि यह मंत्र कौन वेद का है? कई एक आर्यसमाजी कह देते हैं कि गृह्यसूत्र का होगा। होगा तो रहे, तुम से गृह्यसूत्र से क्या मतलब? यह भी कोई सिद्धांत है कि आज सनातनधर्मियों के गृह्यसूत्र को मानलें और कल को उसी गृह्यसूत्र को वेद विरुद्ध कह कर अप्रमाण ठहरादें। तुम्हें अपने धर्म ग्रन्थों से मतलब है या संसार भर के धर्मग्रन्थ टटोलते हो? ऐसे आदमियों का क्या विश्वास। आज सनातनधर्म के ग्रंथों को प्रमाण मानते हो, कल को ईसाइयों की धर्म पुस्तक बाइबिल को प्रमाण मान बैठोगे, यह आर्यसमाज है या चूं चूं का मुरब्बा। यह मंत्र तो गृह्यसूत्रों में भी कहीं नहीं? आर्यसमाजियों को बेवकूफ बनाने के लिये स्वा० दयानन्द जी ने लिखा है? टटोलो यह जाली मंत्र किस वेद का है?

नं (७६) फिर आगे चल कर स्वामी दयानन्द जी एक मंत्र और लिखते हैं कि—

ओं भूः पुनातु शिरसि, ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः, ओं स्वः पुनातु कण्ठे, ओं महः पुनातु हृदये, ओं जनः पुनातु नाभ्याम्, ओं तपः पुनातु पादयोः, ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि, ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

मेरे प्यारे आर्यसमाजी भाइयो! तुम बतलाओ कि यह मंत्र कौन वेद का है? स्वामी जी ने तो लिखा था कि हमारा धर्म पुस्तक वेद है उसी को हम मानते हैं अब स्वामी जी ने यह लवेद का मंत्र तुम्हारे लिये क्यों लिखा?

नं० (८०) स्वा० दयानन्द जी ने जो देवतर्पण में:

ओं ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम्।

ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्।

ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम्।

ब्रह्मादि देवगणास्तृप्यन्ताम् ॥

सत्यार्थप्रकाश पृ० ६७

ये चार मंत्र लिखे हैं ये किस वेद के हैं ? क्या कोई आर्यसमाजी इनके बतलाने की कृपा करेगा ? कृपा तो तब करे जब ये वेद में हों, ये तो बिलकुल ताजे बने हैं। ताजे बनों को कोई वेद में कैसे दिखला देगा ? ईश्वर ने वेद बनाया किन्तु ये चार मंत्र बनाने भूल गया अतएव ये दयानन्द जी ने बना दिये, अब बतलाओ ईश्वर बड़ा या दयानन्द ?

नं० (८१) सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६७ में ऋषितर्पण लिखते हुये जो चार मंत्र।

ओं मरीच्यादय ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम्।

मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम्।

मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् ॥

लिखे हैं, ये किस वेद के हैं ? सच तो यह है कि "मुखं किमस्यासीत्" इस मंत्र के भाष्य में जो स्वा० दयानन्द जी ने ईश्वर को मूर्ख लिखा था अब स्वामी जी नये नये मंत्र बनाकर यह सिद्ध कर रहे हैं कि ईश्वर मूर्ख है और आप विद्वान हैं।

नं० (८२) सत्यार्थप्रकाश पृ० ६८ में पितृ तर्पण लिखते हुये स्वामी जी कुछ मंत्र लिखते हैं वे मंत्र ये हैं।

ओं सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम्।

अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम्।

बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम्।

सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम्।

हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम्।

आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम्।

सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम्।

यमादिभ्यो नमः यमादींस्तर्पयामि।

पित्रे स्वधा नमः पितरं तर्पयामि।

पितामहाय स्वधा नमः पितामहं तर्पयामि ।
प्रपितामहाय स्वधा नमः प्रपितामहं तर्पयामि ।
मात्रे स्वधा नमो मातरं तर्पयामि ।
पितामह्यै स्वधा नमः पितामहीं तर्पयामि ।
प्रपितामह्यै स्वधा नमः प्रपितामहीं तर्पयामि ।
स्वपत्न्यै स्वधा नमः स्वपत्नीं तर्पयामि ।
सम्बन्धिभ्यः स्वधा नमः सम्बन्धिनस्तर्पयामि ।
सगोत्रेभ्यः स्वधा नमः सगोत्रांस्तर्पयामि ॥

आर्यसमाजियों को पता लगाना चाहिये कि ये किस वेद के मंत्र हैं। अब कोई पता लगावे तो हमें भी लिख दे कि ये अमुक वेद में लिखे हैं। पता क्या लगावे खाक जब वेद में हैं ही नहीं ?

एक दिन आर्यसमाज काशी में प्रश्नोत्तर के तौर पर यह प्रसंग छिड़ा। आर्यसमाज की तरफ से स्वा० दर्शनानन्द और सनातनधर्म की तरफ से हम थे। हमने कहा कि वेद में पिण्डपितृयज्ञ का विधान है उसी पिण्डपितृयज्ञ को स्मृति और गृह्य सूत्रों ने श्राद्ध के नाम से याद किया है। यजुर्वेद अध्याय १९ और अथर्व वेद काण्ड १८ के कई सौ मंत्र श्राद्ध को कह रहे हैं फिर आर्यसमाज श्राद्ध का खण्डन कैसे करता है ?

इसको सुनकर स्वर्गवासी स्वा० दर्शनानन्द जी ने कहा कि पंडित जी ने सत्यार्थप्रकाश नहीं पढ़ा, यदि सत्यार्थप्रकाश पढ़ा होता तो ऐसा न समझते। सत्यार्थप्रकाश में स्पष्टरूप से लिखा है कि श्राद्ध-तर्पण जीवित पितरों का होता है और आर्यसमाज बराबर मानता है। हां मृतपितरों का श्राद्ध तर्पण जो सनातनधर्म मानता है अवैदिक होने के कारण आर्यसमाज उसका खण्डन करता है। हमने कहा कि क्या आर्यसमाज सत्यार्थप्रकाश में जीवित पितरों के तर्पण के वेद मंत्र दिखला सकती है ? स्वामी जी ने कहा जी हां, लीजिये सत्यार्थप्रकाश। स्वामी जी ने पन्ना खोलकर सत्यार्थप्रकाश हमारे पास भेज दिया। हमने इन मंत्रों को पढ़ा, पढ़कर स्वामी जी से कहा कि ये मंत्र वेद के नहीं हैं बनावटी हैं यदि वेद के हों तो स्वामी जी पता बतलावें। इस पर स्वामी जी बहुत हंसे और हंसकर बोले कि तुम हमसे भी बढ़ गये, हम पुराणों में बनावट बतलाते हैं और तुम वेद में बनावट बतलाते हो, ये मन्त्र अथर्व वेद काण्ड १८ के हैं।

इसको सुन कर हमने कहा कि स्वामी जी ! ज्ञात होता है आपने कभी अथर्ववेद काण्ड १८ का पाठ नहीं किया। हमारा दृढ़ विश्वास है कि अथर्ववेद काण्ड १८ में ये मन्त्र नहीं हैं। हमने बीसियों बार १८ वें काण्ड का पाठ किया, यहां पर ये मन्त्र होते तो क्या हमको न मिलते ? इन मन्त्रों को १८ वें काण्ड में आप दिखला ही नहीं सकते।

यह सुन कर स्वामी जी ने मूल अथर्ववेद उठाया और आठ सात मिनट तक १८ वें काण्ड के पन्ने उथले किन्तु ये मन्त्र वहां नहीं मिले, मिलें तो तब जब १८ वें काण्ड में हों।

स्वामी जी कुछ सुस्त पड़ गये और बोले कि अथर्ववेद के १८ वें काण्डमें तो नहीं हैं। फिर सोचे और सोच कर बोले कि ऋग्वेद के छठे अष्टक में हैं। हमने कहा कि आपने ऋग्वेद का षष्ठ अष्टक भी नहीं पढ़ा, उसमें इस प्रकार के मन्त्र ही नहीं आते ? स्वामी जी ने ऋग्वेद का षष्ठ अष्टक देखा, जब उसमें ये मंत्र न निकले तब बोले कि मैं भूल गया, सामवेद में हैं। हमने कहा सामवेद में भी नहीं, यदि हैं तो दिखलाइये ? २२ मिनट तक स्वामी जी ने सामवेद टटोला किंतु ये मन्त्र न मिले तब बोले किसी वेद में हैं जरूर, मैंने आंख से देखे हैं किंतु पता याद नहीं रहा।

हमने कहा स्वामी जी ! ये मन्त्र चारों वेदों में कहीं भी नहीं हैं, ये तो जाली मन्त्र हैं, और आज तो क्या आप जन्म भर में भी हमको वेदों में ये मन्त्र नहीं दिखला सकते ? स्वामी जी चुप हो गये, जनता ने ताली बजा दी, समस्त मनुष्य यह समझ गये कि वेद में जीवित पितरों का श्राद्ध तर्पण नहीं है आर्यसमाज बनावटी मन्त्र बनाकर जीवित पितरों का श्राद्ध तर्पण सिद्ध करती है। अवसर पड़ने पर भी जब आर्यसमाज इन नकली मन्त्रों को वेद में न दिखला सकी तो अब क्या दिखलावेगी। जब वेद में हैं ही नहीं तब कहां से दिखला देगी।

(८३) सत्यार्थप्रकाश पृ० ६६ में लिखा है कि—

ओं अग्नये स्वाहा। सोमायस्वाहा।
अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।
धन्वन्तरये स्वाहा। कुह्वै स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा।

प्रजापतये स्वाहा । सह्यावा पृथिवीभ्यां स्वाहा ।

स्विष्टकृते स्वाहा ।

ये मन्त्र वेद के नहीं हैं, नहीं मालूम आर्यसमाज संसार को धोखा देने के लिये वेद वेद क्यों चिल्लाता है । कहता तो यही है कि हम वेद से भिन्न एक अक्षर नहीं मानते किन्तु यहां पर यह गृह्य क्यों माना ? कई एक सज्जन बात बनाने के लिये यह कह देंगे कि इतना गृह्य वेदानुकूल है । झूठी बात है, न वेद में बैश्वदेव का विधान और न उसके मन्त्र, फिर जबर्दस्ती से कोई वेदानुकूल कैसे बना देगा ?

नं० (८४) सत्यार्थप्रकाश पृ० १०० में लिखा है कि—

ओं सानुगायेन्द्राय नमः । सानुगाय यमाय नमः ।

सानुगाय वरुणाय नमः । सानुगाय सोमाय नमः ।

मरुद्भ्यो नमः । अद्भ्यो नमः वनस्पतिभ्यो नमः ।

श्रियै नमः भद्रकाल्यै नमः । ब्रह्मपतये नमः ।

वास्तुपतये नमः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः । नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः ।

सर्वात्मभूतये नमः ।

क्या कोई आर्यसमाजी इन मन्त्रों को वेद में दिखला सकता है गृह्यसूत्र और धर्मशास्त्र के कुछ मन्त्रों को लेकर उनकी काट छांट कर स्वामी जी ने ताजे गर्मागर्म मन्त्र आर्यसमाजियों के आगे रक्खे हैं । स्वामी जी की जब कोई युक्ति काम नहीं करती तब वे तुरंत ताजे मन्त्र बना कर वेद के नाम से आर्यसमाजियों के आगे रख देते हैं । ये लोग पढ़ते लिखते हैं नहीं समझते हैं कि स्वामी जी झूठ थोड़े ही लिखेंगे, जाल थोड़े ही बनावेंगे । मन्त्र वेद के तब तो लिखे हैं । बस इतने पर ही ये लोग वैदिक बनने का झूठा दावा कर बैठते हैं ।

हठ

स्वा० दयानन्द जी जब किसी तरह से भी पार नहीं पाते, जब उनका पक्ष सर्वथा ही गिर जाता है तब कह बैठते हैं कि तुम्हारा कहना ठीक नहीं है असम्भव है, इसको हम कभी नहीं मानेंगे !

नं० (८४) स्वा० दयानन्द जी के साथ मुन्शी इन्द्रमणि जी का "नमस्ते" पर शास्त्रार्थ हुआ, इस शास्त्रार्थ के मध्यस्थ वेदव्याख्याता पं० भीमसेन जी हुये। पंडित जी ने दोनों के कथन को सुन कर फैसला दिया कि परस्पर में नमस्ते करना स्वामी जी ने वेद और धर्मशास्त्र तथा इतिहास पुराण से सिद्ध नहीं कर पाया इस कारण इस शास्त्रार्थ में स्वामी दयानन्द जी की हार हुई। स्वामी जी ने ही पण्डित भीमसेन जी को मध्यस्थ बनाया था इतने पर भी उनका फैसला नहीं माना, कह दिया कि तुम्हारे इस असम्बद्ध फैसले को हम नहीं मानते।

नं० (८६) स्वा० दयानन्द जी और राजा शिवप्रसाद जी सितारे हिन्द में "ब्राह्मणग्रन्थ वेद हैं" इस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द कहते थे कि ब्राह्मणग्रन्थ वेद हैं और स्वामी जी कहते थे कि नहीं नहीं ब्राह्मणग्रन्थ पुराण हैं। इस शास्त्रार्थ के सभापति श्री श्री साहब बहादुर प्रेंसिपल क्वीन्स कालेज काशी हुये, इन्होंने अपने फैसले में लिखा कि ब्राह्मणग्रन्थ वेद हैं, स्वामी जी ने कह दिया कि हम इस फैसले को भी नहीं मानते।

नं० (८७) डुमराँव जिला आरा में राजा के सामने राजपंडित परमहंस जी और दयानन्द जी में मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। राजा के सामने यह कह दिया कि राजपंडित बहुत विद्वान् है, वेद ज्ञाता है, इसके बराबर भारतवर्ष में कोई पंडित नहीं। मूर्तिपूजा में इसके वैदिक प्रमाण इतने प्रबल हैं कि जिनसे आज मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मूर्तिपूजा वेद में लिखी है, यह कह कर स्वामी जी डुमराँव से चले आये। एक महीना बाद पं० तारादत्त जी बनारस वालों से कह दिया कि हमने डुमराँव में अपनी हार स्वीकार ही नहीं की।

नं० (८८) हाथरस में हरजसराय अध्यापक वालों के साथ में स्वामी जी का शास्त्रार्थ दश मिनट हुआ, विषय यह था कि स्वामी जी संसार का उपादान कारण प्रकृति को मानते थे और हरजसराय जी ईश्वर को। दश मिनट के अन्दर ही स्वामी जी ने कह दिया कि पंडित जी आप का पक्ष बड़ा प्रबल है, इस पर मैं अपनी हार स्वीकार करता हूँ। यह कह कर स्वामी जी अलीगढ़ चले गये, अलीगढ़ से पंडित जी को एक चिट्ठी लिखी कि मैंने हार स्वीकार नहीं की है, कभी अवसर मिलेगा तो फिर शास्त्रार्थ करूँगा।

नं० (८९) स्वामी जी ने प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाश में मृतकों का श्राद्ध